10. रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय –

हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर, 1908 ई. में सिमरिया, मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। इनके पिता रवि सिंह एवं माता मनरूप देवी थी। दिनकर जब दो वर्ष के ही थे कि इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। फलतः दिनकर और इनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी माता द्वारा किया गया। इनका बचपन एवं कैशोर्य देहात में बीता, जिससे वास्तविक जीवन की कठोरता से सामना हुआ। आपने प्राथमिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। मिडिल तक की शिक्षा 'राष्ट्रीय मिडिल स्कूल' में प्राप्त की। यह स्कूल उस समय सरकारी व्यवस्था (विदेशी-सरकार) के विरोध में खोला गया था। शायद यहीं से दिनकर के मन और मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का विकास प्रारम्भ हुआ। हाई स्कूल शिक्षा 'मोकामाघाट हाई स्कूल' से पूरी की। इस समय तक इनका विवाह भी हो चुका था और ये एक पुत्र के पिता भी बन गए थे। 1928 में मैट्रिक के बाद पटना विश्वविद्यालय से 1932 में इतिहास विषय के साथ बी.ए. ऑनर्स किया। तत्पश्चात् कुछ समय प्रधानाध्यापक रहने के बाद बिहार सरकार में 'सब-रजिस्ट्रार' के पद पर रहे। इस पद पर लगभग 9 वर्ष तक रहे एवं बिहार की पीड़ित अवस्था को समझा। आप विश्वविद्यालय के व्याख्याता रहे तो कुलपति भी रहे। 1952 से बारह वर्ष तक आप राज्य सभा के सदस्य रहे। सन् 1965 से 1971 तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे।

रचना-संसार –

दिनकर के कवि जीवन का वास्तविक प्रारम्भ सन् 1935 में हुआ जब 'रेणुका' प्रकाशित हुई। इनकी आरम्भिक रचनाएँ आत्ममंथन की रचनाएँ कहलाती हैं। कवि इनमें स्वयं को पहचान कर नया मार्ग बनाने की कोशिश करता है। दिनकरजी की पद्य रचनाओं में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'नील कुसुम', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'द्वन्द्वगीत', 'इतिहास के आँसू', 'सीपी और शंख', 'नीम के पत्ते', 'नये सुभाषित', 'आत्मा की आँखें', 'बापू', 'दिल्ली', 'प्रणभंग', 'धूप और धुँआ', 'चक्रवात' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि प्रसिद्ध रही हैं। 'द्वन्द्वगीत' रुबाइयों का संग्रह है।

पद्य के अतिरिक्त दिनकर ने गद्य में भी उच्च स्तरीय साहित्य की रचना की है। उनमें 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण', 'हमारी सांस्कृतिक कहानी' एवं 'शुद्ध कविता की खोज' आदि प्रमुख हैं। **बाल साहित्य-संग्रह** – 1. मिर्च का मजा, 2. सूरज का ब्याह।

दिनकर के काव्य में एक सामाजिक चेतना हमेशा विद्यमान रही है। राष्ट्रीय भावना जिसका मूल तत्त्व है। राजनीतिक विषय इनकी कविताओं में ज्वलंत रूप से रहे हैं। दिनकर ने पद्य के अतिरिक्त अन्य विधाओं में भी लिखा है। दिनकर की रचनाओं में इनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखती है। इनकी कविताएँ मूलतः ओज और तेज की कविताएँ हैं, जिनमें सुप्त और कायर व्यक्ति को जगाने की क्षमता है जो मन में जोश भर देती हैं। अन्यायी एवं अत्याचारी का खुला विरोध मिलता है। असमानता, भेदभाव एवं शोषण के

खिलाफ रणभेरी बजती रहती है। इन सबके उपरांत भी इनके काव्य में सांस्कृतिक चिन्तन-मनन की प्रक्रिया जारी रहती है। दिनकर अन्यायियों के दुश्मन; तो दब-कुचले के परम हितैषी दिखाई देते हैं। इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' एवं पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया है।

पाठ परिचय –

इस पाठ में दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य का 'तृतीय सर्ग' का संकलित अंश लिया गया है। 'कुरुक्षेत्र' में कवि 'महाभारत' महाकाव्य के पौराणिक पात्रों के माध्यम से युद्ध एवं शान्ति के सम्बन्ध में प्रश्न उठाता है। यहाँ प्रस्तुत 'तृतीय सर्ग' के संकलित अंश में भीष्म व युधिष्ठिर के मध्य संवाद चल रहा है। युधिष्ठिर स्वयं को दोषी मानकर युद्ध से विमुख हो रहे हैं। भीष्म उनसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह बता रहे हैं कि छल, कपट एवं धोखे से बनाई गई शान्ति, शान्ति नहीं होती है बल्कि यह तो युद्ध की दबी हुई चिनगारी है। साथ ही यह भी कहते हैं कि युद्ध का असली दोषी कौन होता है ? वह जो कि अन्याय के विरुद्ध न्याय हेतु हथियार उठाता है या फिर वह जो अन्याय और ताकत से कृत्रिम शान्ति थोपने का प्रयास करता है। भीष्म तरह-तरह के तर्कों से युधिष्ठिर को समझाते हैं। यही कविता का संदेश है कि यदि हम सही हैं तो अन्याय का विरोध युद्ध तक जाकर कर सकते हैं। यद्यपि युद्ध निंद्य है परन्तु अन्यायपूर्ण शान्ति से वह ठीक है।

मूल पाठ –

कुरुक्षेत्र

(तृतीय सर्ग का संकलित अंश)

समर निंद्य है धर्मराज, पर,
कहो, शांति वह क्या है,
जो अनीति पर स्थित होकर भी
बनी हुई सरला है ?
सुख-समृद्धि का विपुल कोष
संचित कर कल, बल, छल से,
किसी क्षुधित का ग्रास छीन,
धन लूट किसी निर्बल से।
सब समेट, प्रहरी बिठला कर
कहती कुछ मत बोलो,
शन्ति-सुधा बह रही, न इसमें
गरल क्रान्ति का घोलो।
हिलो-डुलो मत, हृदय-रक्त
अपना मुझको पीने दो,
अचल रहे साम्राज्य शान्ति का,

जियो और जीने दो।
सच है, सत्ता सिमट–सिमट
जिनके हाथों में आयी,
शान्तिभक्त वे साधु पुरुष
क्यों चाहें कभी लड़ाई ?
सुख का सम्यक्-रूप विभाजन
जहाँ नीति से, नय से
संभव नहीं; अशान्ति दबी हो
जहाँ खड्ग के भय से,
जहाँ पालते हों अनीति-पद्धति
को सत्ताधारी,
जहाँ सूत्रधर हों समाज के
अन्यायी, अविचारी;
नीतियुक्त प्रस्ताव सन्धि के
जहाँ न आदर पायें;
जहाँ सत्य कहने वालों के
सीस उतारे जायें;
जहाँ खड्ग-बल एकमात्र
आधार बने शासन का;
दबे क्रोध से भभक रहा हो
हृदय जहाँ जन-जन का;
सहते-सहते अनय जहाँ
मर रहा मनुज का मन हो;
समझ कापुरुष अपने को
धिक्कार रहा जन-जन हो;
अहंकार के साथ घृणा का
जहाँ द्वन्द्वहो जारी;
ऊपर शान्ति, तलातल में
हो छिटक रही चिनगारी;
आगामी विस्फोट काल के
मुख पर दमक रहा हो;

इंगित में अंगार विवश
भावों के चमक रहा हो;
पढ़कर भी संकेत सजग हों
किन्तु, न सत्ताधारी;
दुर्मति और अनल में दें
आहुतियाँ बारी-बारी;
कभी नये शोषण से, कभी
उपेक्षा, कभी दमन से,
अपमानों से कभी, कभी
शर-वेधक व्यंग्य–वचन से।
दबे हुए आवेग वहाँ यदि
उबल किसी दिन फूटें,
संयम छोड़, काल बन मानव
अन्यायी पर टूटें;
कहो कौन दायी होगा
उस दारुण जगद्दहन का
अहंकार या घृणा ? कौन
दोषी होगा उस रण का ?
तुम विषण्ण हो समझ
हुआ जगदाह तुम्हारे कर से।
सोचो तो, क्या अग्नि समर की
बरसी थी अम्बर से ?
अथवा अकस्मात् मिट्टी से
फूटी थी यह ज्वाला ?
या मंत्रों के बल से जनमी
थी यह शिखा कराला ?
कुरुक्षेत्र के पूर्व नहीं क्या
समर लगा था चलने ?
प्रतिहिंसा का दीप भयानक
हृदय-हृदय में बलने ?
शान्ति खोलकर खड्ग क्रान्ति का

जब वर्जन करती है,
तभी जान लो, किसी समर का
वह सर्जन करती है।
शान्ति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।
ऐसी शान्ति राज्य करती है
तन पर नहीं, हृदय पर,
नर के ऊँचे विश्वासों पर,
श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।
न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है,
जब तक न्याय न आता,
जैसा भी हो, महल शान्ति का
सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम शांति सशंक आप
अपने से ही डरती है,
खड्ग छोड़ विश्वास किसी का
कभी नहीं करती है।
और जिन्हें इस शान्ति-व्यवस्था
में सुख-भोग सुलभ है,
उनके लिए शान्ति ही जीवन–
सार, सिद्धि दुर्लभ है।
पर जिनकी अस्थियाँ चबाकर,
शोणित पीकर तन का,
जीती है यह शान्ति, दाह
समझो कुछ उनके मन का।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जायें,
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जियें या कि मिट जायें ?

न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मरके।
किसने कहा, पाप है समुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?
क्षमा, दया, तप, तेज, मनोबल
की दे वृथा दुहाई,
धर्मराज व्यंजित करते तुम
मानव की कदराई।
हिंसा का आघात तपस्या ने
कब, कहाँ सहा है?
देवों का दल सदा दानवों
से हारता रहा है।
मनःशक्ति प्यारी थी तुमको
यदि पौरुष ज्वलन से,
लोभ किया क्यों भरत-राज्य का?
फिर आये क्यों वन से ?
पिया भीम ने विष, लाक्षागृह
जला, हुए वनवासी,
केशकर्षिता प्रिया सभा-सम्मुख
कहलायी दासी।
क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा;
पर नर-व्याघ्र सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु-समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको

कायर समझा उतना ही।

अत्याचार सहन करने का
कुफल यही होता है,
पौरुष का आतंक मनुज
कोमल होकर खोता है।

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दन्तहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो ?

तीन दिवस तक पन्थ माँगते
रघुपति सिन्धु-किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।

सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बन्धन में।

सच पूछो, तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।

सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की,
क्षमा वहाँ निष्फल है।

गरल–घूँट पी जाने का
मिस है, वाणी का छल है।

•••

शब्दार्थ –

समर – युद्ध / विपुल – अगाध, अधिक / कल – यंत्र / प्रहरी – पहरेदार / गरल – विष, जहर / नय – नीतिपूर्वक, न्यायपूर्वक / सूत्रधर – नियंत्रित करने वाला / अनय – अन्याय / इंगित – संकेत, इशारा, मन का भाव / शर – वेधक, बाण / जगद्दहन – संसार की आग / बलने – जलने / सर्जन – रचना, उत्पादन, जन्म देना, नव निर्माण / न्यास – धरोहर, थाती, किसी को विश्वासपूर्वक सौंपी गई थाती / सार – तत्त्व, निष्कर्ष, तात्पर्य, किसी पदार्थ का मूल भाग / शोणित – खून, रक्त, रुधिर, रक्त वर्ण / वृथा – व्यर्थ, बेकार, निरर्थक, मूर्खतापूर्ण / कदराई – कायरता, कायरपन / लाक्षागृह – लाख से बना घर / नर–व्याघ्र – नर रूपी बाघ / भुजंग – साँप / सिन्धु – सागर, समुद्र / दीप्ति – चमक, छटा, प्रकाश, काँति, प्रभा, द्युति। निंद्य – निंदनीय, निंदा योग्य / कोष – खजाना / क्षुधित – भूखा / सुधा – अमृत / सम्यक् – ठीक, उचित, समान / खड्ग – तलवार / भभक – भड़क जाना, भभकने की अवस्था / तलातल – नीच–नीचे, सात पाताल लोकों में से एक / दुर्गति – दुर्दशा, कुपरिस्थिति / आवेग – प्रबल मनोवेग / शिखा कराला – भयानक / अग्नि ज्वाला / वर्जन – निषेध, मनाही, त्याग / प्रणय – प्रेम, प्यार, अनुराग / सुलभ – सहज, सुगम, आसानी से प्राप्त होने वाला / सिद्धि – निपुणता, दक्षता, कार्य पूरा होना, सम्पन्नता / संघात – आघात, टक्कर, हत्या / व्यंजित – जिसकी व्यंजना की गई हो, संकेतित / पौरुष – साहस, शौर्य, पुरुषार्थ / केशकर्षिता – जिसके बाल खींचे गये हों, द्रौपदी / रिपु – शत्रु, दुश्मन / नाद – ध्वनि, आवाज, गंभीर ध्वनि / त्राहि–त्राहि – आर्तनाद, चीत्कार, रक्षा के लिए पुकारना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'कुरुक्षेत्र' काव्य के अनुसार शान्ति का प्रथम न्यास है ?
   (क) अन्याय (ख) न्याय
   (ग) द्वेष (घ) ईर्ष्या ( )
2. कवि ने नर-व्याघ्र किसे कहा है ?
   (क) कर्ण को (ख) भीम को
   (ग) दुर्योधन (सुयोधन) को (घ) अर्जुन को ( )
3. राम तीन दिन तक सागर से क्या माँगते रहे ?
   (क) अनाज (ख) रास्ता
   (ग) कपड़े (घ) हथियार ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोग किस भुजंग से डरते हैं ?

2. विनय की दीप्ति किसमें बसती है ?

3. सहिष्णुता किसके लिए अभिशाप है ?

4. आज की कृत्रिम शान्ति किसकी रखवाली करती है ?

5. वास्तव में युद्ध करने के लिए दोषी कौन है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कृत्रिम शांति किससे डरती है और क्यों ?

2. न्यायोचित अधिकार यदि माँगने से न मिले तो वीर लोग क्या करते हैं ?

3. अत्याचार सहन करने का कुफल क्या होता है ?

4. क्षमा किस पुरुष को शोभती है ?

5. 'भय बिनु होय न प्रीति' तुलसी की इन पंक्तियों के समकक्ष पाठ में आई पंक्तियों को चुनिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बिना शक्ति के क्षमाशील होने के क्या परिणाम होते हैं ? पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

2. पाठ के आधार पर शान्ति और युद्ध पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

3. **निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–**

(क) सच है सत्ता सिमट ..... खड्ग के भय से,

(ख) शान्ति नहीं तब तक ..... श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।

(ग) स्वत्व माँगने से न .....या कि खुद मरके।

(घ) क्षमा शोभती उस भुजंग .....अनुनय प्यारे-प्यारे।

•••